# प्रतिरक्षा भारती
# Pratiraksha Bharti

भारतीय प्रतिरक्षा मजदूर संघ का मुख पत्र

अक्टूबर २०२४ • वर्ष-विंशति (२१) • अंक १० • मूल्य : १० • वार्षिक मूल्य : १२० ₹

"To succeed in your mission, you must have single-minded devotion to your goal."

*Our Humble Tribute to*

**The Missile Man of India and the Former President**

**Bharat Ratna**

**Dr. APJ Abdul Kalam**

(15th Oct. 1931 - 27th July 2015)

on his *Birth Anniversary*

**BPMS Deligate Submitted Memorandum In Hyderabad To Sri Sameer Kamat , Chairman Of DRDO**

# आयुध निर्माणी के निगमीकरण के विरोध में 1 अक्टूबर को काला दिवस मनाकर विरोध प्रदर्शन करते हुए आयुध निर्माणियों के कर्मचारी

# सम्पादक की कलम से

– श्री साधू सिंह

प्रिय मित्रों।

आप सभी को धनतेरस ,दीपावली, गोवर्धन पूजा, छठ माता पर्व की बहुत–बहुत शुभकामनाएं। यह सभी पर्व आपके और आपके परिवार के जीवन में एक नई उमंग और उत्साह लाएं। आप सभी सुखी और सम्पन्न रहें।

मित्रों आप सभी आने वाले त्रैवार्षिक अधिवेशन की तैयारी कर रहे होंगे। इस अधिवेशन में भी सीमित संख्या में आना है। यह व्यवस्था एक मजबूरी है। आयोजकों की अपनी मजबूरी है जितनी आवासीय व्यवस्था हो सकती है उतने ही लोगों को अधिवेशन में बुलाया जाता है। महासंघ उन तमाम कार्यकर्ताओं से क्षमा चाहता है जो अधिवेशन में आने के इच्छुक है पर उनको नहीं बुला पा रहे हैं। इस कमी को पूरा करने के लिये कुछ व्यवस्था करने का प्रयास महासंघ को करने की जरूरत है। और कुछ प्रयास किया भी जाएगा।

जैसे फेस बुक के माध्यम से ऑन लाइन प्रसारण यदि सम्भव होगा किया जाएगा। मित्रों इस अधिवेशन में कुछ महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित होंगे और उसके आधार पर आगे की कार्यवाही सुनिश्चित होगी। आप सभी के सुझाव भी आमंत्रित है। सरकारी कर्मचारियों की दो बड़ी समस्याओं को हल करने के लिये कुछ प्रस्ताव पारित होंगे। आठवें वेतन आयोग का गठन और पुरानी पेंशन योजना की बहाली पर भी प्रस्ताव पारित होंगे। साथ ही आयुध निर्माणियों के कर्मचारियों की सेवाशर्तों को प्रोटेक्ट करने के लिये प्रसार भारती मॉडल की मांग पर भी प्रस्ताव पारित होंगे। एक और बड़ी समस्या सभी विभागों में कर्मचारियो की कमी से कार्य संस्कृति प्रभावित हो रही है इसलिये रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिये सभी विभागों में रिक्त स्थानों को भरने के लिये भर्ती प्रक्रिया शुरू की जाये यह भी प्रस्ताव पारित होगा।

मित्रों आज यह लेख दीपावली के समय लिखा जा रहा है कर्मचारियों को बोनस भुगतान काफी रक्षा मंत्रालय के विभागों में नहीं हुआ। समय रहते महासंघ ने कार्यवाही भी की परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। दशहरा के पूर्व बोनस का भुगतान होता था वह अब दीपावली तक भी नहीं हो रहा। इसके लिये विभागीय अधिकारी और रक्षा मंत्रालय के अधिकारी दोषी है। महासंघ इस पर गम्भीर है और फिर से माननीय रक्षा मंत्री जी से शीघ्र ही बात की जाएगी। इसके पूर्व भी कई मामलों में अधिकारियों के असहयोग के कारण समस्याओं का कोई हल नहीं निकलता। माननीय मंत्रियों का तो और भी बुरा हाल है। अभी माननीय सुप्रीम कोर्ट ने भी सरकार की कार्य प्रणाली पर गम्भीर टिप्पणी की है कि सरकार अपनी जिम्मेदारियों का ठीक से निर्वाह नहीं करती जिससे अदालतों पर बोझ बढ़ रहा है कुछ मामलों में जुर्माना भी लगाया लेकिन फिर भी ब्यूरोक्रेसी और माननीयों के ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। उदाहरण के लिये आप सभी को ज्ञात होगा कि जून और दिसम्बर में सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों को नोशनल इंक्रीमेंट देने के सम्बंध में तीन बार स्पष्ट आदेश के बाद भी सम्बंधित कर्मचारियों को यह लाभ नहीं दिया और बार–बार सुप्रीम कोर्ट जाकर स्पष्टीकरण मांगा। तब परेशान होकर एक अंतरिम आर्डर देना पड़ा। इस अंतरिम आर्डर के बाद भी अभी भी बहुत से विभाग फिर स्पष्टीकरण मांगेंगे ही। इस कार्यप्रणाली पर सरकार को सख्त कदम उठाने की जरूत है। दूसरा उदाहरण पेंशन कम्युटेशन 15 साल के बाद कर्मचारी को उसका पैसा वापस किया जाता है जबकि वर्तमान ब्याज दरों पर 10 वर्ष 8 माह के बाद कम्युटेड पोरेशन वापस हो जाना चाहिये। कई कोर्ट केश हो चुके सभी कर्मचारियों के पक्ष में है फिर भी सरकार निर्णय नहीं लेगी और कर्मचारी जो सेवानिवृत्त हो चुके हैं न्यायालय की शरण में जाएंगे सरकार अपना काम ठीक से करने लगे तो कर्मचारियों को परेशान न होना पड़े और न्यायालयों पर भी बोझ कम पड़े। बहुत से मामले जिन पर कर्मचारियों को न्यायालय की शरण में बारबार जाना होता है आयुध निर्माणियों और MOD के अन्य कर्मचारियों को रात्रिकालीन भत्ता के लिये छठे पे कमीशन के बाद न्यायालय जाना हुआ और फिर से अधिकारियों ने सांतवें पे कमीशन में वही किया और फिर एक बार कर्मचारी कोर्ट में जाने को मजबूर है। OFB के कर्मचारियों के OT की गणना में सभी भत्तों को सम्मलित करने हेतु मद्रास हाई कोर्ट तक ने कर्मचारियों के पक्ष में निर्णय किया कई CAT के निर्णय कर्मचारियों के पक्ष में है फैक्ट्री एक्ट पढ़कर कोई भी 2 दिन में निर्णय कर सकता है लेकिन 2012 से मामला सुप्रीम कोर्ट में विचाराधीन है लेकिन किसी को फुर्सत नहीं है कि सही और गलत का निर्णय नियमों को पढ़कर कर सके। आधे से अधिक फैक्ट्री में यह भुगतान हो रहा है ।इस तरह की नीतियां आखिर क्या दर्शाती है। ब्यूरोक्रेसी की मानसिकता अभी भी अंग्रेजों के जमाने की है आज भी कोई अंतर नहीं और हमारे माननीय मंत्रीगण आंख बंद करके उनका ही अनुसरण कर रहे है। हमारे प्रधानमंत्री चाहे जितना ब्यूरोक्रेसी में सुधार करने का प्रयास कर लें कुछ भी नहीं हो सकता क्योंकि मंत्रीगण उनका अंधानुकरण कर रहे है यही कारण है कि सरकार से सरकारी कर्मचारी खुश नहीं है।

**सरकारी विभगों में कार्य करने वाले ठेका श्रमिकों का बुरा हाल।**

मित्रों आज सभी सरकारी प्रतिष्ठानों में बड़ी संख्या में ठेका श्रमिक कार्यरत है सरकार इन ठेका श्रमिकों के कल्याण के लिये बहुत कुछ करती है। परन्तु भ्रष्ट व्यवस्था के कारण इन श्रमिकों का अत्यंत शोषण होता है। ठेका श्रमिकों के वेतन में बराबर वृद्धि करती रहती है उनके लिये भी महंगाई भत्ता में भी वृद्धि करती है लेकिन इन श्रमिकों का लगातार शोषण ठेकेदार और प्रतिष्ठानों के अधिकारी मिलकर करते रहते है। यदि कोई आवाज उठाता है तो उसे बाहर कर दिया जाता जबकि स्पष्ट आदेश है कि ठेका बदलने पर ठेका श्रमिक जो वर्षों से काम करते आ रहे है वही काम करेंगे। लेकिन श्रमिकों को धमकी दी जाती है कि हमें पैसा नहीं दोगे तो तुम्हे बाहर कर दिया जाएगा और कई बार ऐसा होता भी है। स्थाई कर्मचारियों की यूनियन कुछ बोलती है तो अधिकारी उनके खिलाफ कार्यवाही कर देते है। यदि ठेका श्रमिक आवाज उठाता है तो भी बाहर कर दिया जाता है ऐसी स्थित में कर्मचारी आखिर कहाँ जाये। वर्तमान समय में ठेका श्रमिक का वेतन 20000 से अधिक है परन्तु उसके हाथ में 10 से 12 हजार ही आ पाता है ठेकेदार उसकी पास बुक ATM अपने पास रख लेते है। कर्मचारियों से खाली चेक पर हस्ताक्षर करा लेते हैं और आधा वेतन अपने पास रख लेते है फिर इस पैसे का बंटवारा विभाग में अधिकारियों के बीच में होता है। खुलेआम भ्रष्टाचारी इन श्रमिकों का शोषण कर रहे हैं। प्रिंसिपल एम्प्लॉयर संस्थान का हेड होता है वह भी कुछ नहीं करता। इस समस्या पर हम लोगों को लगातार काम करना होगा।

❐

# पंच पर्व दीपावली

– शिवेन्द्र सागर शर्मा

दीपावली सबसे प्रमुख त्योहार है। इस त्योहार का ध्यान आते ही मन–मयूर नाच उठता है। यह त्योहार दीपों का पर्व होने से हम सभी का मन आलोकित करता है। यह त्योहार कार्तिक माह की अमावस्या के दिन मनाया जाता है। अमावस्या की अंधेरी रात जगमग असंख्य दीपों से जगमगाने लगती है।

भगवान राम 14 वर्ष के वनवास के बाद अयोध्या लौटे थे, इस खुशी में अयोध्यावासियों ने दीये जलाकर उनका स्वागत किया था। भगवान श्रीकृष्ण ने नरकासुर नामक राक्षस का वध भी इसी दिन किया था। यह दिन भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण दिवस भी है। इन सभी कारणों से हम दीपावली का त्योहार मनाते हैं। यह हिन्दू धर्म का सबसे बड़ा त्योहार है। इस त्योहार के आने के कई दिन पहले से ही घरों की लिपाई–पुताई, सजावट प्रारंभ हो जाती है। नए कपड़े बनवाए जाते हैं, मिठाइयां बनाई जाती हैं। वर्षा के बाद की गंदगी एवं कीट पतंगे बढ़ जाते हैं किन्तु इस पर्व के होने से सफाई और स्वच्छता हो जाती है। लक्ष्मी जी के आगमन में चमक–दमक की जाती है। यह त्योहार पांच दिनों तक मनाया जाता है। धनतेरस से भाई दूज तक यह त्योहार मनाया जाता है। धनतेरस के दिन व्यापारी अपने बही खाते नए बनाते हैं। अगले दिन नरक चौदस के दिन सूर्योदय से पूर्व स्नान करना अच्छा माना जाता है। अमावस्या के दिन लक्ष्मीजी की पूजा की जाती है। खील–बताशे का प्रसाद चढ़ाया जाता है। नए कपड़े पहने जाते हैं। फुलझड़ी, पटाखे छोड़े जाते हैं। असंख्य दीपों की रंग–बिरंगी रोशनियां मन को मोह लेती हैं। दुकानों, बाजारों और घरों की सजावट दर्शनीय रहती है। अगले दिन गोवर्धन पूजा तथा इसके अगले दिन भाई दूज का पर्व बहनें भाईयों को उनकी लम्बी आयु के लिए टीका लगाकर प्रार्थना करती हैं।

यह त्योहार पर परस्पर मेल मिलाप करते हैं व एक दूसरे को भेंट (उपहार) देते है। एक–दूसरे के गले लगकर दीपावली की शुभकामनाएं दी जाती हैं। गृहिणियां मेहमानों का स्वागत करती हैं। लोग छोटे–बड़े, अमीर–गरीब का भेद भूलकर आपस में मिल–जुलकर यह त्योहार मनाते हैं।

**अक्टूबर 2024**

**दीपावली का पौराणिक महत्व :**

1. भगवान राम की विजय : दीपावली भगवान राम की विजय का जश्न मनाता है, जिन्होंने रावण को पराजित किया था।
2. भगवान कृष्ण की विजय : दीपावली भगवान कृष्ण की विजय का जश्न मनाता है, जिन्होंने नरकासुर नामक राक्षस को पराजित किया था।
3. लक्ष्मी पूजा : दीपावली के दिन लक्ष्मी पूजा की जाती है, जो धन और समृद्धि की देवी है।
4. गणेश पूजा : दीपावली के दिन गणेश पूजा की जाती है, जो ज्ञान और बुद्धि के देवता हैं।

**आधुनिक विचारधारा :**

1. सामाजिक एकता : दीपावली सामाजिक एकता का प्रतीक है, जो लोगों को एक साथ लाता है।
2. सांस्कृतिक महत्व : दीपावली भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो हमारी परंपराओं और मूल्यों को दर्शाता है।
3. आर्थिक महत्व : दीपावली आर्थिक महत्व का भी एक महत्वपूर्ण त्योहार है, जो व्यापार और उद्योग को बढ़ावा देता है।

**दीपावली मनाने के तरीके :**

1. घर की सफाई करें। 2. दीये जलाएं 3. लक्ष्मी पूजा करें
4. गणेश पूजा करें। 5. नए कपड़े पहनें 6. अपने घर को सजाएं
7. अपने परिवार और मित्रों के साथ मिलकर त्योहार का आनंद लें।
8. आतिशबाजी करें।
9. मिठाइयां बांटें। 10. दान करें।

दीपावली के महत्व को समझने से हम अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं और अपने समाज को स्वच्छ और सुंदर बना सकते हैं।

# समस्या को सुलझाने के दृष्टिकोण

— सी. के. सजीनारायन

हमें समस्या को समाधान करने के दृष्टिकोण की आवश्यकता है। समस्या को सुलझाने की एक कला है। जिम्मेदार लोग हर समस्या को सुलझाने के दृष्टिकोण से पहुंचेंगे। इसी से कई समस्याओं का समाधान होगा। हम सबको समाधान होना चाहिए और समस्या नहीं होना चाहिए।

एक पागल स्वयं एक कुत्ते जैसा व्यवहार कर सकता है। लेकिन चिकित्सक को जो उसके साथ व्यवहार करता है, सोचना चाहिए कि वह एक इंसान है। डॉक्टर मरीज के लिए स्नेही होना चाहिए परन्तु रोग के लिए नहीं। समाधान सत्यापन के बाद ही दिया जाना चाहिए। निदान की परिशुद्धता प्राप्त करने के बाद ही आपरेशन करना चाहिए, हमेशा अप्रत्याशित आकस्मिकता के लिए एक मार्जिन के साथ। ऑपरेशन सफल, लेकिन रोगी की मौत, ऐसा नहीं होना चाहिए।

: सुधार–सक्षम लोगों को सौंपना

समस्याएं जिसे पहुँचती हैं, तो समाधान उस व्यक्ति के भरोसे मिलता है। संघर्ष का संकल्प केवल जिसको समाधान करने के लिए विशेष अंतर्निहित क्षमता है उस को सौंपा जाना है। समस्या को सुलझाने के लिए श्रुत आवश्यक है। कुछ लोग खुद समस्या का समाधान है। यह एक महत्वपूर्ण प्रबंधन नेतृत्व के लिए आवश्यक कुशलता है।

: समस्या का हिस्सा मत बनो

जो समस्या को हल करना चाहता है, वे हमेशा इस के समाधान का रूप में रहना है। कुछ लोग संकट में छोटे मुद्दों का विस्तार करने वाले होते हैं। हमेशा समस्याओं के बारे में ही बात करते लोग हैं। वे समस्याओं का प्रचार करनेवाले हैं। बहुत से लोग अपना तनाव कम करने केलिए उनकी समस्या की बात करते हैं। कुछ समस्याग्रस्त लोग की प्रकृति समस्याओं में आसानी से कूद जाने की है। अगर वह उस समस्या शामिल हो जाते हैं तो समस्या का हल नहीं निकल सकता है। दिल का दौरा पड़ने के साथ अस्पताल भर्ती व्यक्ति की कहानी है। उस समय उसको एक करोड़ रुपये की एक लॉटरी मिली। रिश्तेदार उलझन में थे कि उसे इस के बारे में कैसे सूचित करें ? तो उसे बताने का काम वे एक मनोवैज्ञानिक को सौंपा। मनोवैज्ञानिक उसके पास गया और पूछा कि अगर उसको लॉटरी में एक लाख रुपये मिल जाता है तो क्या करेंगे? रोगी ने जवाब दिया कि मैं अपने कर्ज वापस करूंगा। 5 लाख मिलते तो क्या करेंगे? मैं कुछ भूमि की खरीद करूँगा फिर 50 लाख के बारे में क्या है? मैं एक बड़ा घर बनाऊंगा। फिर चारों ओर के लोगों मनोवैज्ञानिक के साथ खुश थे। फिर अंत में मनोवैज्ञानिक ने पूछा कि लॉटरी में एक करोड़ मिल जाता है तो क्या करेंगे? रोगी अक्सर सवाल से नाराज था और उसने कहा कि मैं निश्चित रूप से इसमें से आधा आप को दे दूँगा! यह सुनते ही मनोवैज्ञानिक को दिल का दौरा पड गया और वह नीचे गिर पड़ा। जब हम समस्या को हल करने के लिए जा रहे हैं, तब हमे समस्या में ही नहीं गिर पड़ना चाहिए।

: संगठन सर्वोच्च

जो मुद्दों को व्यवस्थित करने के लिए जाता है, उसे संगठनात्मक हित देखना चाहिए, और व्यक्तिगत हित नहीं। क्यों कि संगठन सर्वोच्च है और कोई इनसे ऊपर नहीं है, यह संदेश सभी स्तरों के लिए जाना चाहिए।

हूँ। मेरे हर कथन से संगठन को मदद मिलेगी, नुकसान नहीं होगा । हमेशा ऐसा भाव होना चाहिए कि मैं संगठन का निर्माण कर रहा हमारा दृष्टिकोण मुद्दों को जोड़नेवाला होना चाहिए, तोडनेवाला नहीं। हम पहले कार्यकर्ता हैं नेता नहीं। कार्यकर्ताओं को संगठित करें, नेतागिरी न करें।

एक बार एक कार्यकर्ता का नेता के साथ मतभेद था। कार्यकर्ता बैठक से बाहर चला गया। तीन दिन के बाद कार्यकर्ता वापस आ गया। नेता ने पूछारू ष्तुम मेरे साथ झगडा करके गये और क्यों वापस आये। कार्यकर्ता ने कहारू ष्मैं आप को देखने के लिए वापस आया नहीं। आप यहाँ कुछ समय के लिए हो सकते हैं और उस के बाद कोई दूसरा रहेगा। मैं केवल संगठन को देखता हूँष्। ऐसी मानसिकता होनी चाहिए।

: कोई अनिवार्य नहीं

श्रीगुरुजी ने कहा कि सरसंघचालक की स्थिति विक्रमादित्य सिंहासन पर बैठने की तरह है। उस पर बैठा एक चरवाहा भी प्रबुद्ध हो जाता है।

ब्लिट्ज ने लिखा, रा.स्व.सं. के अस्तित्व के लिए श्रीगुरुजी का असाधारण व्यक्तित्व जिम्मेदार है। इसलिए यह श्रीगुरुजी के बाद समाप्त हो जाएगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। प्रेस के लोगों के बाद कौन? श्रीगुरुजी ने जवाब दिया, कोई भी हो सकता है। मेरे बाद पूछा कि श्रीगुरुजी प्रलय (सब कुछ नाश हो सकता है), ऐसा दृष्टिकोण बुरा है।

सभी कार्यकर्ता महत्वपूर्ण हैं और कोई भी अपरिहार्य या अनिवार्य नहीं है। महान होने पर भी कोई व्यक्ति अनिवार्य नहीं है। एक बार एक संघचालक गुरूजी के पास आये और कहा कि स्थानांतरित किया गया एक प्रचारक वहां बहुत आवश्यक है। उन्होंने प्रचारक कई गुणों की व्याख्या की। लेकिन बीच में उन्होंने यह भी कहा कि प्रचारक उस जगह पर अनिवार्य है। तो श्रीगुरुजी ने बीच में रोककर के कहा, अगर एक व्यक्ति संगठन में अनिवार्य है, तो यह खतरनाक स्थिति है और इसलिए जरूर स्थानांतरित किया जाना चाहिए। अच्छा कार्यकर्ता वह है जो अपने काम के द्वारा नए कार्यकर्ताओं को बनाता है और स्वयं नगण्य हो जाता है। सुई मोती का हार बनाने के लिए आवश्यक है। लेकिन हार बनाये जाने पर सुई को हार में रहने के लिए नहीं सोचना चाहिए। इसी तरह अगर वहाँ व्यक्तिगत समीकरण में बदलाव है तो व्यक्ति को बदलना है।

जब बड़े भाई राम नरेश सिंहजी की मृत्यु हो गई, तो ठेंगड़ीजी ने कहा– जब गंगा अच्छी तरह और लगातार बह रही है, तो हम इससे एक बाल्टी पानी भर लेते हैं। हमें लगता है कि गंगा में एक रिक्तता हो गयी है। लेकिन जब बाल्टी उठाया जाता है, उस पल आसपास से पानी वहाँ भर जाता हैं और बिना रुकावट गंगा बहती रहती हैं। अगर हम और आप चले जाएँ, तो भी संगठन बिना रुकावट आगे बढ़ता जाएगा ।

: व्यक्तिवाद नहीं, बल्कि ध्येयवाद और सामूहिक नेतृत्व

संघ ने भगवत ध्वज को गुरु के रूप में स्वीकार किया है, अन्य किसी संस्थापक या किसी दूसरे को नहीं। यह अवैयक्तिक मानसिकता है। हमारा आंदोलन तत्व है और व्यक्ति या नेता आधारित नहीं है। कार्यकर्ता राष्ट्र के प्रति निष्ठावान और ध्येय के प्रति निष्ठावान होना चाहिए, व्यक्ति के प्रति निष्ठावान नहीं होना चाहिए। यानी हमारी आत्मीयता एक उद्देश्य के लिए होना चाहिए और किसी भी व्यक्ति के लिए नहीं। भा.म.सं. की तरह संगठन व्यक्तियों के लिए जिंदाबाद नहीं लगाते हैं। वहाँ कोई "मैं" नहीं हो सकता है लेकिन इस के स्थान में ष्हमश होना चाहिए। डाक्टरजी ने कहा, संघ का मतलब एक व्यक्ति नहीं, हर व्यक्ति एक साथ है। किसने कहा यह नहीं, कहा, यह महत्वपूर्ण बात है।

करता हूँ कि यह हिन्दू राष्ट्र नहीं है तो आप क्या कहेंगे? उस पल से एक बार डाक्टरजी ने बाल शाखा में पूछा, अगर मैं घोषणा एक बच्चे ने कहा, आप रा.स्व.सं. के सर संघचालक नहीं रहेंगे।

डाक्टरजी बहुत खुश हुए और बच्चे को गले लगा लिया और कहा ''अब आपने एकदम सही स्वयंसेवक होना साबित कर दिया है। आपने यह नहीं कहा कि हम रा.स्व.सं. छोड़ देंगेष''। हमारी प्रतिबद्धता और विश्वास हमारे संगठन, उसके आदर्शों और विचारधारा में होना चाहिए, और एक व्यक्ति नेता के लिए नहीं। नहीं तो अगर एक व्यक्ति या नेता संगठन छोड़ते हैं, तो हम भी संगठन छोड़ देंगे। हमको केवल संगठनात्मक एजेंडा होना चाहिए, कोई व्यक्तिगत एजेंडा नहीं । व्यक्ति आ–जा सकता हैं, लेकिन संगठन को आगे ही जाना चाहिए ।

संघाष्टकम संघ संबन्धित अष्टक हैं, उस में कहते हैं, जो हमारे साथ आते हैं, अगर वे बीच में वापस भी जाएंगे, तो भी हमें यात्रा जारी रखना है। संगठन के अंदर हमें संग रहित दोस्ती होना चाहिए और possessive (संग सहित ) दोस्ती नहीं। संग सहित दोस्ती अधिकार बनाता है कि आप केवल उस व्यक्ति को प्यार करें और दूसरों से नफरत कच और देवयानी की कहानी यह बताती है। जब कच ने मृत संजीवनी मंत्र सीखने का अपना मिशन पूरा कर लिया, तब उसने अपने प्रेमी देवयानी को अलविदा कह दिया और अपने मिशनदाता के पास वापस चला गया। कार्यकर्ताओं के बीच में आदर्शवाद पर आधारित संबंध चाहिए।

: शुरू में समाधान करना

प्रारम्भ और उचित समय में ही समस्याओं का निवारण किया जाना चाहिए। दोष निवारण की गति तेज होनी चाहिए। संगठन में समस्याओं पर जब समय पर ध्यान नहीं दिया जाता तो वे अपनी आदतों का एक हिस्सा बन जाएँगी। एक व्यक्ति, जिसका एक अच्छा जीवन था दुर्भाग्य से गरीब बन गया और उपजीविका के लिए भीख माँगना शुरू कर दिया। वह बहुत उदास था और एक ज्योतिषी के पास जाकर दुख से बाहर जाने का रास्ता पूछा। ज्योतिषी ने कहा कि तुम्हें और एक वर्ष के लिए कठिनाइयाँ लग जाएँगी। इसके बाद आपकी कठिनाइयाँ खत्म हो जाएगी। व्यक्ति ने पूछा, कैसे? ज्योतिषी ने कहा, भीख माँगना आप के एक आदत बन जाएगी और तुम इसको मुश्किल नहीं मानोगे!

: मूल तत्वों को पकड़ो (Go to fundamentals)

संगठनात्मक काम में जब आप उलझन में हैं, तो संकट से उबरने के लिए बुनियादी बातों को ध्यान रखना चाहिए। ये स्पष्ट समझ, प्रतिकूल स्थिति में हमारे रक्षक हैं। सिद्धांतों के अनुसार नीति तय करो। उस कार्य की दृष्टि से कट्टरपंथी बनें। कट्टरवाद शब्द गलती से धार्मिक आतंकवाद (religious terrorism) मानते हैं। मौलिक सिद्धांतों का पालन करनेवाले कट्टरपंथी हैं। उस अर्थ में, ईसामसीह, बुद्ध, गांधीजी आदि कट्टरपंथी थे । वे कुछ मूलभूत सिद्धांतों के लिए अपने जीवन का बलिदान करने के लिए तैयार थे। शुरू से ही अधिष्ठान होना चाहिए और यह बाद में अपने रास्ते में प्राप्त किया जाता ऐसा नहीं है।

: बुनियादी बातों पर कोई समझौता नहीं

संगठन में परिवर्तनीय और अपरिवर्तनीय होता है (स्थायी और अस्थायी या बुनियादी)। अपरिवर्तनीय के उदाहरण हैं– हिन्दू राष्ट्र, राष्ट्र सर्वोपरि, पारिवारिक संगटन, टीम का कार्य आदि। बुनियादी बातों पर कोई समझौता नहीं। मौलिक सिद्धांतों पर दृढ़ रहें, और समयानुकूल सतही परिवर्तनों को स्वीकार करें। एक ध्येयवादी और अवसरवादी के संघर्ष में समझौता का कोई सवाल ही नहीं हैं। भगवान और शैतान के बीच होनेवाले एक विवाद में समझौता के लिए कोई गुंजाइश नहीं है, लेकिन देवत्व की ही मान्यता होनी है।

: परिवार के वातावरण में समाधान

के त्रुटि सुधार में परिवार की अवधारणा को लागू करें। एक परिवार वातावरण में समस्याओं का समाधान करें, जैसे परिवार विवादों को हल कर रहे हैं और केवल तकनीकी रूप से संवैधानिक रास्ते में नहीं। वहाँ किसी का भी चरित्र हनन नहीं होना चाहिए। अगर दांत से जीम कट जाती है, तो हम दाँत को तोड़ते नहीं । उसी तरह अपने कार्यकर्ताओं से थोड़ी गलती हो जाने पर भी उसे क्षमा करते हैं। हमको मानवीय दृष्टिकोण रखना चाहिए। एच. आर. का मतलब केवल ''मानव संसाधन'' (Human Resources) नहीं है, बल्कि अधिक से ''मानव संबंध'' (Human Relation) है।

: दिल जीतो

दिल जीतने के लिए चार उपाय हैं–

1. पर निंदा नहीं

2. आत्म प्रशंसा

3. खुलेआम अभिनन्दन करो और

4. दोष एकांत में ठीक करो ।

मानव सुधार प्यार या आत्मीयता के माध्यम से किया जाना हैं।

सुधार अधिकार द्वारा नहीं किया जा सकता। सिर्फ अगर आपस के संबंध अच्छे हैं, तो आप उसे सही कर सकते हैं, क्योंकि यह एक अपमान के रूप में नहीं लिया जाएगा। अन्यथा यह एक ऐसे व्यक्ति जो यह कर सकते हैं, उनके माध्यम से करना चाहिए।

: सह कार्यकर्ताओं को प्यार

सह कार्यकर्ताओं को प्यार करना जानें। यह ममत्व या आत्मीयता है। दिल से बात करो और अधर से नहीं। मन में आध्यात्मिकता चाहिए, और क्रोध या अन्य से बचना चाहिए। भगवद् गीता (3:30) कहती हैं, ''युद्धस्व विगतज्वर'' यानी 'तनाव के बिना लड़ाई करना'। किसी पर अपराध मत करो (सर्वेषाम अविरोधेन)। डांटना भी, प्यार के साथ करना चाहिए ।

स्टालिन के साम्यवाद का आधार, तीव्र द्वेष और इस के साथ नरसंहार था। श्रीगुरुजी ने हमें गहन प्यार करना सिखाया है। श्रीगुरुजी का पत्र जब उनकी मृत्यु के बाद खोला गया तो उसमें उन्होंने कहाः– ''यदि मेरे विशेष किसी व्यवहार के कारण, किसी को कोई भी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा तो मैं उन्हें हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ कृपया मुझे माफ कर दे।''

एक प्रोफेसर की पत्नी ने प्रोफेसर के पास बच्चे को सौंपा और वह बाहर चली गयी। जब बच्चा रोने लगा, वह बच्चे को बाहर ले गया और बताया कि कैसे 100 करोड़ कि.मी. की दूरी पर सूर्य गैसों से बना है, और कैसे चंद्रमा पृथ्वी घुमाएगी, कैसे ''बड़े धमाके'' के माध्यम से ब्रह्मांड अस्तित्व में आया आदि। बालक ने रोना जारी रखा। प्रोफेसर को नहीं समझ आ रहा था कि बच्चा क्यों रो रहा है। फिर नौकरानी आयी और बच्चे को गोद में ले लिया। उसने प्यार से बच्चे को आकाश में चाँद दिखाया और कहा कि वह चाँद लाकर बच्चे को दे देंगी। बालक खुश हो गया और उसका रोना बंद हो गया। कार्यकर्ताओं के साथ भी प्यार से व्यवहार किया जाना चाहिए।

: आंतरिक सुधार और स्नेहन (Lubrication) की नियमित व्यवस्था

हर संगठन को छवि निर्माण और क्षति को नियंत्रित करने के लिए एक प्रणाली होनी चाहिए। संगठन में आंतरिक घर्षण से बचने के लिए, आंतरिक सुधार और स्नेहन के लिए नियमित तंत्र होना चाहिए। जोड़ों में, गेंद और सॉकेट पूरी तरह से काम करते है क्योंकि वहाँ पर्याप्त स्नेहन है। तेल को संस्कृत में स्नेह (मतलब प्यार भी है) कहा जाता है। स्नेहन तो परस्पर विश्वास, भरोसा, दोस्ती आदि हैं।

: समस्या सुलझाने

संघ में निवारक और सुधारक उपाय हमेशा साधारण है। अनुशासनात्मक कार्रवाई केवल एक दुर्लभ और अंतिम उपाय है। सबको एक साथ ले लो, सही करो। जो गलत तरीके से जाता है, उसको केवल असाधारण परिस्थिति में ही निष्कासित करना चाहिए– यह है नीति । अगर किसी को जिम्मेदारी से मुक्त करना है, तो पहले से उसे परामर्श करना चाहिए। आंतरिक सुधारात्मक उपाय असली दोस्ती में एक प्राकृतिक तरीके से काम करते हैं। स्खलित लोगों से व्यक्तिगत बात होनी चाहिए। केवल शांतिपूर्ण माहौल में रचनात्मक काम बढ़ जाएगा।

अपने से छोटों के साथ समस्याओं पर चर्चा करने के लिए वरिष्ठ कार्यकर्ता उपलब्ध होना चाहिए। वरिष्ठ कार्यकर्ता को पूर्णकालीन कार्यकर्ताओं के साथ व्यक्तिगत बात करना चाहिए। क्षमा संगठन में एक महान गुण है। अशांति में क्षमा एक गुण है। निकटतम मित्रों की जिम्मेदारी है कि उनके दोस्त गलत रास्ते में भटक कर न गिर जाये ऐसा देखना। किसी को एक सोच नहीं बनाना चाहिए कि जो भी गलती करते हैं, दोस्त उसे बचाने के लिए होगा। अन्यथा दोस्त जल्दी ही खतम हो जाएगा। गलती को सही कर सकते हैं, लेकिन शरारत को नहीं।

दूसरों के सामने सही करना नहीं, बल्कि व्यक्तिगत रूप से सही करना है। एक बैठक में एक किशोर कुछ लिख रहा था। अधिकारी डाँटना चाहता था, लेकिन बैठक के बाद कार्यवाह ने उसे कुछ पूछा और उसके बाद धीरे–धीरे उसे सही कर दिया। यदि एक व्यक्ति देर से आता है या अनुपस्थित है, तब केवल सकारात्मक टिप्पणी किया जाना चाहिए। उसकी अनुपस्थिति के लिए कुछ कारण हो सकता है और उसे सुनना चाहिए। हमें नहीं कहना चाहिए कि वह हमेशा ऐसा ही होता है। अमेरिका में संघ बैठक में भाग लेने लिए भारत से संसद के एक सदस्य को था। उन्होंने कहा कि वह शाम को 6 बजे आ जाएंगे, लेकिन 7 बजे के बाद भी नहीं आये। संघ अधिकारी ने कार्यकर्ताओं से कहा कि उस के लिए यह शहर नया है और देर होने पर भी वह आएगा। ऐसा दृष्टिकोण होना चाहिए, और कार्यकर्ताओं के बीच खुलेआम दोष नहीं बताना चाहिए। हमारी सोच होनी चाहिए कि सब कुछ का एक सकारात्मक अंत होगा। एक कार्यकर्ता के बारे में अनुपस्थिति में बात मत करो। उसके आने के बाद पहले अपने काम, घर आदि के बारे में पूछना और उसके बाद ही उचित समय पर खातों आदि के बारे में पूछना। हमें 'डाउटिंग थॉमस' नहीं होना चाहिए। जब आप आरोप लगाते हैं कि एक व्यक्ति गलत है, उसका अहंकार तुरंत इसे जायज ठहराने की कोशिश करेगा। इसके बजाय हमें कहना चाहिए कि इसे इस तरह किया जाना है। यह सकारात्मक दृष्टिकोण है।

एक बार, एक लंबे समय से लंबित संघर्ष सुलझाने के लिए एक जिला कार्यवाह ने बैठक बुलाई। शुरू में उन्होंने कहा कि दोनों पक्षों को सुनने के बाद मैं अपने निर्णय की घोषणा करूंगा। यदि कोई मानता है कि यह स्वीकार्य नहीं है, तो वह बैठक छोड़ कर जा सकता हैं। दो व्यक्ति उठकर खड़े हुए और कहा, यह तुम्हारे निर्णय पर निर्भर है। फिर कार्यवाह ने कहा कि तुम दोनों लोग बैठक छोड़ सकते हो। उन्होंने बैठक छोड़ दिया। उसके बाद एक सौहार्दपूर्ण समाधान पर पहुंच गये थे और सबने खुशी से स्वीकार किया। बैठक खतम होने के बाद, कार्यवाह, ने वरिष्ठ कार्यकर्ताओं को बुलाया और उनसे कहा, जो दो छोड़ गये थे वे निडर लोग हैं, और ऐसे लोग संगठन के लिए आवश्यक हैं । उनको संघ विरोधी लोगों के रूप में चिह्नित और पृथक नहीं किया जाना चाहिए। चूंकि उन्होंने अनुशासनहीनता प्रकट की हैं, इसलिए उनको तुरंत बाहर जाने के लिए कहा गया। उनको सही करना और वापस लाना चाहिए। कार्यकर्ताओं को सही करने का यह रवैया होना चाहिए ।

: स्वयं समाधान करना

महाभारत में एक श्लोक है, (5.35.33)रू महात्मा विदुर कहते हैं.

न देवा दण्डमादाय रक्षन्ति पशुपालवत्

यं तु रक्षितुमिच्छन्ति बुद्धया संविभजन्ति तम्

एक चरवाहा भेड़ के लिए भगवान की तरह तुम्हें मार्गदर्शन नहीं करते हैं। लेकिन वे अपनी कठिनाइयों को पार करने की शक्ति देते हैं।

कठिनाइयाँ, आलोचना, बाधाएँ आदि हर एक के जीवन में होते हैं। श्रीकृष्ण और राम को भी थी। इसके बिना कोई भी रह नहीं कर सकता। सभी को विकासात्मक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यह कैसे सामना करना और पार करना है यह महत्वपूर्ण सवाल है।

हर कार्यकर्ता को एक समस्या–मुक्त वातावरण के लिए प्रयास करना चाहिए। मुख्य कार्यकर्ताओं को हमेशा संकट प्रबंधन के लिए आग इंजन के रूप काम नहीं करना चाहिए। उन्हें यह भी देखना चाहिए कि वे समस्या पैदा नहीं करते हैं। आयुर्वेद कहता है, जब आपका शरीर कमजोर है, तो सभी रोग तुम पर हमला करेंगे। तो सबसे अच्छा समाधान खोजने के लिए अपने आंतरिक स्वास्थ्य में सुधार कीजिये। जैसे गैर कामकाज अंग कमजोर हो जाएगा, गैर कामकाज इकाइयाँ भी कमजोर हो जायेंगी। हमें स्वाश्रय विकसित करना है यानी दूसरों पर बिना निर्भर अपनी समस्याओं को हल करने की दक्षता विकसित करनी चाहिए ।

स्व–सुधार करना सबसे अच्छा सुधार है, क्योंकि यह दोहराया नहीं जायेगा। व्यक्तियों को ऊपर से सहायता के बिना स्वयं समस्याओं को हल करने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। एक मुद्दे को हल करने के लिए ऊपर से निर्देश की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए। वरिष्ठ नागरिकों के लिए अपना बहुमूल्य समय खर्च करने के लिए कई अन्य रचनात्मक कार्य हैं। आप अपने आप को अपनी समस्या को हल करने की क्षमता में सुधार करना चाहिए। यह महसूस करना है कि मैं इस मुद्दे को हल करने के लिए हूँ, और केवल एक विपक्ष के जैसे दूरी से आलोचना करने के लिए नहीं। यदि आपका रवैया है कि मैं समस्या को हल करने के लिए तैयार नहीं हूँ या एक बदलाव के लिए तैयार नहीं हूँ तो क्या उपयोग है। यदि आप अपनी खुद की समस्याओं को हल करने में सक्षम नहीं हैं तो आप जल्दी ही संगठन का एक बोझ बन जायेंगे ।

आप एक व्यक्ति को सही नहीं कर सकते हैं, लेकिन आप उसे स्वयं सही करने के लिए मदद कर सकते । वरिष्ठ कार्यकर्ता केवल आप की समस्याओं को हल करने के लिए सहायता कर सकते हैं। वे दिखाते हैं कि आप अपने मन को लागू करके किसी तरह से आप भी वह पा सकते हैं। एक बार एक व्यक्ति अपना कार ड्राइविंग करते समय एक परित्यक्त सड़क के बीच में टायर फट गया। उसने अतिरिक्त आरक्षित टायर फिट करने की कोशिश की। लेकिन अचानक टायर फिट करने की श्नटश सड़क के किनारे की नहर के पानी में गिर गया। उसके सभी आशाओं पर पानी फिर गया। फिर एक व्यक्ति वहाँ आया और उसे अपनी कठिन स्थिति का पता चला। उन्होंने पूछा कि आप एक श्नटश के साथ आरक्षित टायर फिट कर सकते हैं क्या? ड्राइवर ने कहा कि नहीं, कम से कम तीन नट आवश्यक हैं। तब व्यक्ति ने कहा, ठीक है आप तीन टायर से प्रत्येक ध्यान से एक एक नट ले और शेष इनका उपयोग करें। तब ड्राइवर महसूस किया कि उस दिशा में अपने मन को लागू नहीं किया था। चाहिए। नेता के स्वस्थ मन का निर्माण करने में मार्गदर्शन करना।

श्रीगुरुजी ने ''कठोर आत्मनिरीक्षण'' के बारे में कहा । ''निर्दय समीक्षा भी होनी चाहिए। यह आत्मशोधन और आत्मचिंतन है । यहाँ रचनात्मक या सकारात्मक आलोचना होनी चाहिए, जो संगठन के लिए आवश्यक है। हमें स्वयं विश्वास दिलाना है कि राष्ट्र के कारण काम कर रहे समर्पित कार्यकर्ताओं के मन में अश्रद्धा का कारण या श्रद्धा से ध्यान नहीं चाहिए। राजस्थान की विफलता पर एल.के. आडवाणी जी ने कहा, कई बार विफलता ''सेल्फ गोल'' से भी होता है।

: परामर्श देना (Counselling)

श्रीकृष्ण परामर्श के अग्रणी थे। उन्होंने मनोवैज्ञानिक विषाद से प्रभावित अर्जुन को परामर्श दिया। बीच में एक आघात– चिकित्सा के रूप में भी वे विश्वरूप को दिखाया । व्यक्तियों की समस्याओं को हल करने के लिए व्यापक रूप से अब परामर्श इस्तेमाल किया गया तकनीक है। 'ग्राहक' एक स्थिति में गिर जाता है जहां वह अपने मुद्दों को संभालने के लिए या हल करने के लिए, अपना मन ध्यान केंद्रित करने में सक्षम नहीं है। परामर्शदाता ( Counsellor ) ग्राहक की समस्या को हल करने के लिए सही निर्णय लेने के लिए मनवाता है। वह ग्राहक को केवल परामर्श नहीं देता है। बल्कि इसमें परामर्शदाता एक दर्पण की तरह है कि वह ग्राहक के मन को दर्शाता है। व्यक्ति को एक स्वस्थ मन के स्तर पर लेना और ग्राहक ने स्वयं निर्णय लेना, परामर्श की सफलता है। ग्राहक समस्या को सही परिप्रेक्ष्य में समझता है और अपनी क्षमताओं और सीमाओं को भी समझता है, और उसकी मानसिक संघर्ष और तनाव को कम कर देता है। वह स्वयं सही और सुधार करता है।

: सकारात्मक सुधार

समस्याओं को सकारात्मक दृष्टिकोण से पहचानना और सकारात्मक रास्ते से सही करना है। जब कोई गलती करता है, यह एक गलती के रूप में कहने के बजाय, उसे एक बेहतर और सही रास्ते पर लाने के लिए कहना चाहिए। कार्यकर्ता को गिरते समय संभालना चाहिए, और जब वह गिर गया है लात नहीं मारना चाहिए। एक या मामूली गलती की ओर सहानुभूति का दृष्टिकोण होना चाहिए। यह उसे उपहास करने के अवसर के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए।

: आपत धर्म

आपत धर्म सामान्य धर्म नहीं बन जाना चाहिए। शांति के समय और युद्ध के समय के लिए रणनीति अलग है। युद्ध के समय के नेतृत्व, शांति के की स्थिति के लिए योग्य होना जरूरत नहीं है। सामान्य रचना और संकट प्रबंधन अलग है, हमें दोनों का पालन करना चाहिए। हमारे संगठन में एक तेजी से कार्रवाई बल होना चाहिए। लेकिन एक समय में यह केवल शांतिपूर्ण गतिविधियों को अपनाना चाहिए। प्रकुपित करना कराटे में हमले के लिए एक बहाना नहीं है। प्रशिक्षण आत्मरक्षा के लिए ही है लक्ष्य और मार्ग दोनों महान होना **चाहिए।**

❐

# The Right to Form Associations: Restrictions as Exceptions, Not the Norm

- Punit Chandra Gupta
Finance Secretary,BPMS

The Industrial Relations Code (IR Code), 2020, published in the Gazette of India on September 29, 2020, has been brought to introduce significant changes to labor laws in India. One of the key provisions of this Code is its definition of "industry" under Section 2(p), which explicitly excludes activities related to the sovereign functions of the government, including departments engaged in defence research, atomic energy, and space. This exclusion has sparked debates on whether it infringes upon the fundamental right to association, particularly for employees of these departments who are now barred from forming trade unions under the IR Code.

The right of employees in Defence Research, Atomic Energy, and Space to form trade unions is indirectly restricted by the definitions of "Trade Union," "Industry," and "Worker" under Section 2 of the Industrial Relations Code, 2020. The Code's definition of "Industry" specifically excludes government departments involved in defence research, atomic energy, and space, classifying them as outside the scope of industrial activities. Furthermore, the definition of "Worker" under the IR Code applies to individuals engaged in a trade or industry, implying that only those working within recognized "industries" qualify as workers under the Code. Similarly, the definition of a "Trade Union" refers to a combination of workers formed to regulate relations between workers and employers, or between workers themselves. Since these government departments do not fall within the definition of "industry," their employees are not classified as "workers" within an industry and, consequently, lack the legal foundation to form trade unions under the IR Code. This exclusion structurally limits their rights to organize and unionize within the framework of the IR Code.

This new definition of 'Industry' is based on definition of industry passed by the Parliament in 1982 (46 of 1982) but did not come into force. {Resource: Page 1 of Report No. 8 of Standing Committee on Labour (2019-20)}

The IR Code follows a narrower definition of "industry" than its predecessor, the Industrial Disputes Act, 1947, which had a much broader scope for what constituted an industry. The 1947 Act, especially following the landmark Bangalore Water Supply and Sewerage Board Vs. A. Rajappa (1978) judgment, included a wide range of activities under the ambit of "industry," even those performed by the government that did not involve purely sovereign functions. In contrast, the IR Code specifically excludes certain governmental functions related to Defence Research, Atomic Engergy& Space from being classified as industries, thereby preventing workers in these

sectors from forming trade unions.

Whether any satisfactory explanation or rationale behind this exclusion will be provided or we, by ourselves, consider this exclusion stems from the sovereign functions of these departments, which are seen as integral to national security and therefore unsuitable for unionized labor relations.

However, this raises an important question- Should the right to form associations and unions, guaranteed under Article 19(1)(c) of the Indian Constitution, be entirely restricted for these employees? While it is true that fundamental rights can be restricted in the interest of public order, security of the state, and other concerns, such restrictions are typically expected to be temporary and subject to judicial scrutiny. However, the permanent exclusion of certain government employees from forming trade unions appears to be a significant departure from this principle. While they are still allowed to form associations under departmental rules, CCS (Recognition of Service Association Rules), 1993, thereby they fundamental rights have not been restricted by introduction of this clause in IR Code but their exclusion from the Industrial Relations Code prevents them from enjoying the broader protections offered to the employees in trade unions under its predecessor i.e. ID Act, 1947.

In my view, restrictions on fundamental rights, particularly the right to form associations, should only be imposed in exceptional circumstances and not as a permanent measure. A balance must be struck between national security and the rights of employees, ensuring that the latter are not unduly deprived of their rights. More than half a decade has passed since the enactment of the Industrial Dispute Act, 1947, yet no substantial reason has been provided for the exclusion of departments like defence research, atomic energy & space from its ambit.

A few Right to Information (RTI) applications were filed to seek clarity on the matter, but in most cases, the queries were transferred to the Defence Research and Development Organisation (DRDO), only to one department, for reasons best known to the authorities.

We are well aware of many recognised form of Association as guaranteed under Article 19(1)(c) of the constitution like Companies under the Companies Act, 2013, Partnership under the LLP Act, 2008, Co-operatives Societies under different State and Central level legislations, Trade Unions under the Trade Union Act, 1926 etc. There are still many unrecognised form of associations which exist in the society. For the employees or workers, Trade Union Act is more broader, elaborative and protective than any other recognised form of association.

The Supreme Court's ruling in Bangalore Water Supply and Sewerage Board v. A. Rajappa (1978) significantly broadened the scope of the term "industry" under the Industrial Disputes Act, 1947. The Court held that an "industry" includes any systematic activity where the cooperation of employers and employees results in the production of goods or services, regardless of the nature of the organization. This broad definition was meant to protect the rights of workers in a wide variety of sectors, including those engaged in public welfare and non-commercial activities. However, the Bangalore Water Supply case did provide exceptions for sovereign functions of the state, such as defence, policing, and judicial administration. Over the years, subsequent rulings

and reforms have grappled with how to balance these exceptions with the rights of workers. The IR Code of 2020 seems to rely on this exception to justify the exclusion of departments like defence research, atomic energy and space but the question remains whether this is necessary or justifiable in the current context.

More than 50 years since the Industrial Disputes Act, 1947 was promulgated, India has evolved significantly in terms of both its industrial landscape and worker rights. The permanent exclusion of employees in critical sectors like defence research, Space & Atomic Energy from forming trade unions raises concerns about whether such measures are in line with the demands of the time.

The employees of these departments contribute to national progress, and their exclusion through a change in the definition of "industry" appears to limit their ability to advocate for better working conditions. While national security and the sovereign nature of certain functions warrant a level of exception, it may be time to reassess the necessity of permanently excluding entire sectors of government from labor protections, especially in light of the strengthened democratic values that India now upholds. The continued exclusion of workers in these departments demands a fresh examination of why they were left out through a change in the definition of "industry," and whether this exclusion aligns with modern interpretations of worker rights and the Constitutional guarantees provided to all citizens.

The exclusion of defence research and similar departments from the Industrial Relations Code, 2020, by redefining "industry" may have been driven by concerns over national security and the sovereign nature of certain government functions. However, the permanent nature of this exclusion, and the absence of clear reasoning behind it, warrants serious reconsideration. As India continues to evolve, it is essential to strike a balance between protecting national interests and ensuring that employees in all sectors are afforded the fundamental rights in full, not in a restricted form, they are entitled to under the Constitution.

In addition to above, these definitions raise an important question about the rights of contract employees, Fixed Term employees or any other category of employees working in Defence Research, Atomic Energy, and Space to organize and advocate for their interests. While permanent employees in these departments are permitted to form associations under departmental rules, other than regular employees like contract workers, fixed term employees etc are typically not afforded the same rights under these guidelines. This exclusion leaves these categories of employees without a formal avenue to organize or voice their collective concerns, as they fall outside both the departmental associations framework and the trade union protections under the Industrial Relations (IR) Code, 2020.

As a result, contract workers, fixed term workers etc in these departments are doubly excluded—unable to form associations under departmental rules reserved for permanent employees and unable to form trade unions due to the departmental exclusion from the IR Code's scope.

[Based on discussion with AI]

❐

## Government ORDERS

*F. No. 38/10(04)/2024-P&PW(A) (e 10124) Government of India Ministry of Personnel, PG & Pensions Department of Pension & Pensioners' Welfare, New Delhi 18th October, 2024*

### OFFICE MEMORANDUM

**Subject: Revision of pension after authorisation under Central Civil Services (Pension) Rules 2021 - reg.**

The undersigned is directed to say that as per Sub Rule 2 of Rule 66 of CCS(Pension) Rules 2021 [erstwhile Rule 70 of CCS(Pension) Rules 1972], subject to provisions of Rule 7 and 8 of CCS(Pension) Rules 202 l, pension or familv pension once authorised after final assessment or revised under Sub Rule 1 of Rule 66 of CCS(Pension) Rules 2021 shall not be revised to the disadvantage of the pensioner or familv pensioner unless such revision becomes necessary on account of detection of a clerical error subseguentlv. In case the clerical error is detected after a period of two years from the date of authorisation or revision of pension or family pension, no revision of pension to the disadvantage of the pensioner or family pensioner shall be ordered without the concurrence of Department of Pension and Pensioners' Welfare.

2. Further, the question whether the rev1s10n has become necessary on account of a clerical error or not shall be decided by the administrative Ministry or Department. If, consequent on revision of pension or family pension under sub-rule 2, an excess payment of pension or family pension is found to have been made to the pensioner or family pensioner and if such excess pavment is not on account of any mis representation of facts bv the pensioner or family pensioner, the administrative Ministry or Department shall examine in consultation with the Department of Expenditure whether or not recovery of such excess payment can be waived off and issue appropriate orders in accordance with the relevant rules and instructions in this regard. Where the administrative Ministry or Department decides not to v,1aive off the excess payment of pension or family pension, the retired Government servant concerned or family pensioner shall be served with a notice by the Head of Office requiring him to refund the excess payment of pension within a period of two months from the date of receipt of notice by him. In case the Government servant fails to comply with the notice, the Head of Office shall, by order in writing, direct that such excess payment shall be adjusted in instalments by short payments of pension in future, in one or more instalments, as the Head of Office may direct.

3. All Ministries/Departments are requested that the above prov1s1ons of Central Civil Services (Pension) Rules, 2021 may be brought to the notice of all concerned for compliance . ❒

*F. No. 111(;33}/2024-P&PW(E) Ministry of Personnel, PG & Pensions Department of Pension & Pensioners' Welfare, New Delhi 18th October, 2024*

### OFFICE MEMORANDUM

**Subject: Settlement of Family Pension between two wives of a Government Servant or Pensioner under Central Civil Services (Pension) Rules, 2021 - reg.**

The undersigned is directed to say that Department of Pension. in supersession of the Central Civil Services (Pension) Rules, 1972 has notified the Central Civil Services (Pension) Rules, 2021 and Rule 50 of the Central Civil Services (Pension) Rules, 2021 deals with payment of family pension on death of a Government servant/pensioner.

2. In accordance with Rule 50 (6) of the CCS (Pension) Rules, 202, the family pension shall be payable to the members of the family of the deceased Government servant or pensioners in the following order -

i. Subject to provisions of sub-rule (8), widow or widower, {including a post-retiral spouse and judicially separated wife or husband)

ii. subject to provisions of sub-rule (9). children (including adopted children, step children and children born after retirement of the pensioner).

iii. subject to provisions of sub-rule (10). dependent parents (including adoptive parents} of the deceased Government servant or pensioner,

iv. subject to provisions of sub-rule (11), dependent siblings ( i.e. brother or sister) of the deceased Government servant or pensioner, suffering from a mental or physical disability

Whereas the Explanation to Rule 50(6) (1) of the CCS (Pension) Rules, 2021 states that -For the purpose of this rule 'widow' and 'widower' shall mean a spouse, legally wedded to the deceased Government servant or the pensioners.

3. Whereas Rule 50(8)(c) of the CCS (Pension} Rules, 2021 states that Where the deceased Government servant or pensioner is survived by more widow than one, the family pension shall be paid to the widows in equal shares and on the death or ineligibility of a widow, her share of the family pension shall become payable to her child or children who fulfil the eligibility conditions mentioned in sub-rule (9).

4. In this regard, references have been received in this department regarding eligibility of family pension to the second wife when the first wife is alive. Having second wife when the first wife is alive is against the provisions of Hindu Marriage Act, 1955 and also contradictory to the provisions of CCS(P.ension) Rules, 2021. The matter has been examined and it has been decided that such cases needs to be processed in accordance with the provisions of CCS (Pension) Rules, 2021 and the issue of second wife or second marriage being legal or otherwise, maybe decided first in consultation with Department of Legal Affairs on case to case basis for deciding the eligibility for Family Pension.

5. All Ministries/Departments are requested to follow the process of consultation with Department of Legal Affairs before arriving at decision regarding Settlement of Family Pension between two wives under Central Civil Services (Pension} Rules, 2021. Such cases must be brought to the notice of the officer dealing with the pensioners' benefits in the respective Ministry/Department by the attached/subordinate offices.

*No. 19/116/2024-Pers.Pol. (Pay)(Pt) Government of India Ministry of Personnel, Public Grievances & Pensions Department of Personnel & Training , New Delhi 14th October, 2024*

**OFFICE MEMORANDUM**

**Subject: Grant of notional increment on 1st July / 1st January to the employees who retired from Central Govt. service on 30th June/ 31st December respectively for the purpose of calculating their pensionary benefits - regarding .**

The undersigned is directed to say that in terms of Rule 10 of the Central Civil Services (Revise Pay) Rules, 2006, notified by D/o Expenditure vide Notification No.' G. S. R. 622 (E) dated 29.08.2008, date of annual increment was made uniform viz. 1st July of every year with effect from 01.01.2006. It was subsequently decided vide Rule 10 (1) of the Central Civil Services (Revise Pay) Rules, 2016, notified by D/o Expenditure vide Notification No. G. S. R. 721 (E) dated 25.07.2016, that there shall be two dates for grant of increment namely 1st January and 1st July of every year.

2. Hon'ble High Court of Madras in its Order dated 15.09.2017 in W.P. No.15732 of 2017 -P. Ayyamperumal Vs Union of India &\Ors. allowed grant of notional increment to the petitioner on the day following the date of his retirement from service for the purpose of calculation of pensionary benefits. Judgement in the case of Shri P. Ayyamperumal was implemented in personam. Following this, D/o Personnel and Training (DoPT} received a .number of representations from the employees who superannuated on soth June/ 31st December claiming similar benefit. Large number of Court cases have also been filed before Hon'ble Administrative Tribunals, High Courts and Supreme Court on the subject matter.

3. The issue was examined in consultation with the nodal authorities concerned and with due regard to the relevant provisions in the Fundamental Rules (FRs) which regulate grant of increment to the Central Government employees. It is pertinent to note that FR 9(21 )(a) defines 'pay' as the amount sanctioned to a Government servant for a post held by him substantively or in an officiating capacity or to which he is entitled by reason of his position in a cadre. FR 17 provides that subject to any exceptrons specifically made in these Rules, an employee shall begin to draw the pay and allowances attached to his tenure of a post with effect from the date when he assumes the duties of that post and shall cease to draw them as soon as he ceases to discharge those duties. Further, FR 24 stipulates that an increment may be withheld from a Government servant if his conduct has not been good or his work has not been satisfactory .. To summarise these Rule provisions, for availing the benefit of an increment on the date of its accrual, an employee should be in service, should have rendered satisfactory work and should have displayed good conduct during the period of qualifying service.

4. However, Hon'ble Supreme Court vide Order dated 11.04.2023 in Civil Appeal No.2471 of 2023 (@ SLP (C) No. 6185/2020) -Director (Admn. and HR), KPTCL Vs C.P. Mundinamani & Ors, upheld the Orders passed by the Division Bench of the Hon'ble High Court of Karnataka at Bengaluru in Writ Appeal No. 4193/2017 allowing grant of one annual increment, which the original writ petitioners earned on the last day of their service for rendering services during preceding one year from the date of retirement with good behaviour and efficiently, for the purpose of calculating the retiral benefits. However, Union of India was not among the Parties in the said case.

5. Subsequently, Hon'ble Supreme Court vide Order dated 19.05.2023 dismissed SLP(C) No.4722/2021 (Uol Vs M. Siddaraj) filed by M/o Railways on the subject

matter with the observation that the appeals filed therein are squarely covered by the Order dated 11.04.2023 in CA No. 2471 of 2023. Mio Railways filed a Miscellaneous Application (MA No. 2400/2024) before the Hon'ble Supreme Court seeking guidance/ clarification regarding the modalities to be adopted while implementing its Order dated 19.05.2023. On 22.07.2024, while hearing the matter, Supreme Court ordered that the learned counsel for the Union of India shall examine as to whether Union of India needs to file an application in CA No.247,.1/2023 disposed of vide judgment dated 11.04.2023. After due legal consultations on the directions of the Apex Court, this Department filed a Petition (Dy. No. 36418/2024) before Supreme Court on 12.08.2024 seeking review of its Order dated 11.04.2023 which is pending before the Hon'ble Supreme Court.

6. Meanwhile, on 06.09.2024, while hearing MA No. 2400/2024 filed by Mio Railways along with several Intervention Applications tagged therewith, Hon'ble Supreme Court took note of the pending Petition (Dy. No. 36418/2024) filed by Union of India seeking review of .its Order dated 11.04.2023 in CA No.2471/2023 in the matter. While observing that the issue raised in the applications requires consideration insofar as the date of applicability of the judgment dated 11.04.2023 in CA No. 2471/2023 to third parties is concerned, Hon'ble Court issued following directions, by way of an Interim Order, to prevent any further litigation and confusion:

a. The judgment dated 11.04.2023 will be given effect to in case of third parties from the date of the judgment, that is, the pension by taking into account one increment will be payable on and after 01.05.2023. Enhanced pension for the period prior to 30.04.2023 (erroneously mentioned as 31.04.2023 in the Order) will not be paid.

b. For persons who have filed writ petitions and succeeded, the directions given in the said Judgment will operate as res judicata, and accordingly, an enhanced pension by taking one increment would have to be paid.

c. The direction in (b) will not apply, where the judgment has not attained finality, and cases where an appeal has been preferred, or if filed, is entertained by the appellate court.

d. In case any retired employee has filed any application for intervention/impleadment in Civil Appeal No. 3933/2023 or any other writ petition and a beneficial order has been passed, the enhanced pension by including one increment will be payable from the month in which the application for intervention/impleadment was filed,

This interim order will continue tiff further orders of this Court. However, no person who has already received an enhanced pension including arrears, will be affected by the directions in (a), (c) and (d).

Relist in the week commencing 04. 11.2024."

7. The matter has been examined in consultation with D/o Expenditure and D/o Legal Affairs. It is advised that in pursuance of the Order dated 06.09.2024 of the Hon'ble Supreme Court referred above, action may be taken to allow the increment on 1 st July/ 1st January to the Central Government employees who retired/are retiring a day before It became due i.e. on 30th June/315t December and have rendered the requisite qualifying service as on the date of their superannuation with satisfactory work and good conduct for calculating the pension admissible to them. As specifically mentioned in the Orders of the Hon'ble Supreme Court, grant of the notional increment on 1st January/1st July shall be reckoned only for the purpose of calculating the pension admissible and not for the purpose of calculation of other pensionary benefits ..

8. It may also be noted that these instructions are being issued in compliance of the Interim Orders dated 06.09.2024 of the Hon'ble Supreme Court in MA Dy. No.2400/2024 without prejudice to the legal stand of the Union of India in the matter and without prejudice to any change of law in this regard. Further, the action taken shall be subject to the final outcome of the Review Petition (Dy. No.36418/2024) pending before the Hon'ble Supreme Court which is expected to be heard by the Apex Court in the week commencing 04.11.2024.

9. This issues with the concurrence of D/o Expenditure vide their Dy. No. 08- 09/2019-E.III.A(Vol.111)(3969602) dated 08.10.2024 and D/o Legal Affairs vide Computer Dy. No. E 128445 dated 30.09.2024.

10. Hindi Version will follow. ❐

*Integrated HQ of MoD (Army} Quartermaster General's Branch Canteen Services Die, New Delhi 30th September, 2024*

**OFFICE MEMORANDUM**

**Subject: entitlement of canteen facilities to employees of erstwhile ordnance factory board**

1. Refer the following:-

(a) CS Die letter No 95350/Q/ODGCS dated 14 Mar 2022.

(b) GoI, OOP OM No 1(5)/2023/EGoM/Deemed Deput/OF/DP(M&P) dated 09 Sep 2024.

2. The empowered Group of Ministers has approved extension of the period of deemed deputation of all employees of erstwhile Ordnance Factory Board to 7 new DPSUs including transfer of all employees al Directorate of Ordnance (Coordination & Services) under DDP upto 31 Dec 2025.

3. Accordingly, sanction is hereby accorded for extension of Canteen faclities to all employees on deemed deputation to the new DPSUs Including those under the Directorate of Ordnance (Coordination & Services) under the DDP upto 31 Dec 2025.

4. URCs may kindly be instructed to process the application for Canteen Smart Cards In respect of such employees accordingly.

5. Mis SCPL only. The validity of all cards issued to employees of erstwhile OFB will be limited to five years or the date of retirement, whichever 1s earlier and records of cards issued will be maintained in a separate data table.

6. The contents of this letter may please be disseminated to all units, fmns & URCs. ❐

*No. - 57/03/2022-P&PW(B)/8361(6) Government of India Ministry of Personnel, Public Grievances and Pensions Department of Pension and Pensioners' Welfare , New Delhi 11th October, 2024*

**OFFICE MEMORANDUM**

**Subject: Effect of compulsory retirement or dismissal or removal from Government service on the accumulated pension corpus under NPS in respect of Central Government servant covered under the National Pension System -reg.**

The undersigned is directed to say that the Department of Pension and Pensioners' Welfare has notified the Central Civil services (Implementation of National Pension System) Rules, 2021 to govern the service related matters of Central Government civil employees covered under the National Pension System.

2. Rule 18 of the Central Civil Services (Implementation of NPS) Rules, 2021 provides for effect of compulsory retirement or dismissal or removal from Government service on the accumulated pension corpus under NPS in respect of Central Government Civil employees covered under NPS.

3. The rule provides that where a Central Government employee covered under NPS is compulsorily retired from service as a penalty or is dismissed or removed from Government service the lump sum and the annuity out of his accumulated pension corpus shall be paid to him in accordance with the regulations notified by the Pension Fund Regulatory and Development Authority (PFRDA) payable to the Subscriber as admissible in the case of exit of a subscriber from the National Pension System before superannuation.

4. However, the Government employee, at his option, may continue to subscribe to the National Pension System with the same Permanent Retirement Account number as a non Government subscriber, in accordance with the regulations notified by the Authority.

5. The above provisions shall, however, be without prejudice to any action being taken in such cases in respect of gratuity and other retirement benefits not covered by these rules and those benefits shall be regulated in accordance with the rules as applicable to such benefits.

6. All Ministries/ Departments are requested that the above provisions regarding effect of compulsory retirement or dismissal or removal from Government service on the accumulated pension corpus under NP in respect of Central Government Civil employees covered under the NPS may be brought to the notice of the personnel dealing with the PS matters of employees in the Ministry/Department and attached/subordinate offices thereunder for strict implementation ❐

*No. - 57/03/2022-P&PW(B)/8361(6) Government of India Ministry of Personnel, Public Grievances and Pensions Department of Pension and Pensioners' Welfare , New Delhi 11th October, 2024*

**OFFICE MEMORANDUM**

**Subject: Entitlement of voluntary retirement from Government service in respect of Central Govrnment servant covered under the National Pesion System.**

The undersigned is directed to say that the Department of Pension and Pensioners' Welfare has notified the Central Civil Services (Implementation of National Pension System) Rules, 2021 to govern the service related matters of Central Government civil employees covered under the National Pension System.

2. Rule 12 of the Central Civil Services

(Implementation of NPS) Rules, 2021 provides for voluntary retirement from service and entitlement on voluntary retirement from Government service in respect of a Central Government servant covered under National Pension System. The rule provides that at any time after a Central Government employee covered under NPS has completed twenty years' regular service, he may, by giving notice of not less than three months in writing to the appointing authority , retire from service.

3. The notice of voluntary retirement given under sub-rule (1) shall require acceptance by the appointing authority. However , where the appointing authority does not refuse to grant the permission for retirement before the expiry of the period specified in the said notice, the retirement shall become effective from the date of expiry of the said period.

4. Government servant may make a request in writing to the appointing authority to accept notice of voluntary retirement of less than three months giving reasons therefore. The appointing authority, on receipt of such a request, may consider the request for curtailment or the period of notice of three months on merits and if he is satisfied that the curtailment or the period of notice will not cause any administrative inconvenience, the appointing authority may relax the requirement of notice of three months.

5. Government servant who has chosen to retire under this rule and has given the necessary notice to that effect to the appointing authority, shall be precluded from withdrawing his notice except with the specific approval of such authority. However, the request for withdrawal shall be made at least fifteen days before the intended date of his retirement.

6. This rule shall not apply to a Government servant who, -

(a) retires under the Special Voluntary retirement Scheme of Department of Personnel and Training relating to voluntary retirement of surplus employees as notified by their Office Memorandum No. 25013/6/2001-Estt. (A) dated the 28th February, 2002 as amended from time to time; or

(b) retires from Government service for being absorbed in an autonomous body or a public sector undertaking.

7. Government servant, on voluntary retirement from service, shall be entitled to benefits admissible under the Pension Fund Regulatory and Development Authority (Exits and Withdrawals under National Pension System) Regulations, 2015 to the Subscriber retiring on superannuation.

8. If the Government servant intends to continue his Individual Pension Account or to defer payment of benefits under the National Pension System beyond the date of retirement, he shall exercise an option in this regard in accordance with the Pension Fund Regulatory and Development Authority (Exits and Withdrawals under National Pension System) Regulation s, 2015.

9. All Ministries/Departments are requested that the above provisions regarding entitlement on voluntary retirement from Government service in respect of a Central Government servant covered under the National Pension System may be brought to the notice of the personnel dealing with the NPS matters of employees in the Ministry/Department and attached/subordinate offices thereunder, for strict implementation. ❐

*No. 1/5/2024-E.II (B) Government of India Ministry of Finance Department of Expenditure, New Delhi 21st October, 2024*

**OFFICE MEMORANDUM**

**Subject: Revision of rates of Dearness Allowance to Central Government employees effective from 01.07.2024.**

The undersigned is directed to refer to this Department's Office Memorandum No. 1/1/2024-E.11 (B) dated 1ih March, 2024 on the subject mentioned above and to say that the President is pleased to decide that the rates of Dearness Allowance payable to Central Government employees, shall be enhanced from 50% to 53% of the Basic Pay with effect from 1st July, 2024.

2. The term Basic Pay in the revised pay structure means the pay drawn in the prescribed Level in the Pay Matrix as per 7'h CPC recommendations accepted by the Government, but does not include any other type of pay like special pay, etc.

3. The Dearness Allowance will continue to be a distinct element of remuneration and will not be treated as pay within the ambit of FR 9(21 ).

4. The payment on account of Dearness Allowance involving fractions of 50 paise and above may be rounded to the next higher rupee and the fractions of less than 50 paise may be ignored.

5. These orders shall also apply to the civilian employees paid from the Defence Services Estimates and the expenditure will be chargeable to the relevant head of the Defence Services Estimates. In respect of Armed Forces personnel and Railway employees, separate orders will be issued by the Ministry of Defence and Ministry of Railways, respectively.

6. In so far as the persons serving in the Indian Audit

and Accounts Department are concerned, these orders are issued in consultation with the Comptroller and Auditor General of India, as mandated under Article 148(5) of the Constitution of India. ❐

*11/15/2022-P&PW(I-I)-8363 (I) Government of India Ministry of Personnel, Public Grievances and Pensions Department of Pension and Pensioners' Welfare , New Delhi 24th October, 2024*

**OFFICE MEMORANDUM**

**Subject: Change of name of spouse- Advice of Department of Pension and Pensioners' Welfare.**

The undersigned is directed to refer to this Department's OM No. 3(2)/2022- P&PW(II)-7942 dated 6-10-2022 regarding change of name of spouse (Copy attached). The advice contained in the above-mentioned OM dated 06-10-2022 arc as under:

(i) There is no separate procedure prescribed in the CCS (Pension) Rules, 2021 or CCS (Pension) Rules, 1972 for change of name/surname in the PPO of Government employees or spouse after retirement. The PPO is issued on the basis of service record/service book of the employee and the maintenance of service book is concerned with DoPT.

(ii) Further, this matter was discussed in the inter-ministerial Review meeting of pending grievances in CPENGRAMS, held under the chairmanship of Dircctor(PW), Department of Pension & Pensioners' Welfare. Ministry of Statistics & Programme Implementation were informed that they may follow DoPT's OM No. 190016/187-Estt. dated 12th March, 1987 for change of name of family pensioner also. In case the Ministry of Statistics &e Programme Implementation feels that there is some discrepancy in the documents submitted by the complainant family pensioner in support of her application for change of name in the PPO, they may sort it out with her directly and ensure that the request for change of name fulfils the conditions of DoPT's OM No. 190016/187-Est. dated li11 March, 1987.

2. All Ministries/Departments arc requested that the above provisions may be brought to the notice of the personnel dealing with the pensionary benefits in the Ministry/Department and attached/subordinate offices thereunder for compliance. ❐

*No. 3(2)/2022-P&PW(I-I)-8363 (I) Government of India Ministry of Personnel, Public Grievances and Pensions Department of Pension and Pensioners' Welfare , New Delhi 6th October, 2024*

**OFFICE MEMORANDUM**

**Subject: Change of name of spouse Smt. Simro Devi in PPO or Late Shri Man Mohan Chander. Ex-Asstt. seeking advice or Department of Pension & Pensioners' Welfare- reg.**

The undersigned is directed to refer to the Ministry of Statistics & Program Implementation's UO No. A-38012/1/2021-Ad.H dated 8/7/2 and this Department's ID Note No, 3(2)/2022-P&PW-7942 dated 17/5/2022 on the subject mentioned above and to say that the adv of this Department has already been issued vide ID Note dated 17/5/2022 as referred to above.

2. The matter has been re-examined in this Department. It is stated that: -

(i) There is no separate procedure prescribed in the CCS (Pension) Rules, 2021 or CCS (Pension) Rules, 1972 for change of name/surname in the PPO of Government employees or spouse after retirement. The PPO is issued on the basis of service record/service book of the employee and the maintenance of service book is concerned with DoPT.

(ii) Further, this matter was discussed in the inter-ministerial Review meeting of pending grievances in CPENGRAMS, held under the chairmanship of Director(PW), Department of Pension & Pensioners' Welfare. Ministry of Statistics & Programme Implementation were informed that they may follow DoPT's OM No. 190016/)87-Fstt. dated 12" Mai 1987 for change of name of family pensioner also. In case the Ministry of Statistics & Programme Implementation feels that there is some discrepancy in the documents submitted by the complainant family pensioner in support of her application for change of name in the PPO, they may sort it out with her directly and ensure that the request for change of name fulfils the conditions of DoPT's OM No. 190016/187-Fstt, dated 12" March, 1987

3. This issues with the approval of the competent authority. ❐

*No. 3(2)/2022-P&PW(I-I)-8363 (I) Government of India Ministry of Personnel, Public Grievances and Pensions Department of Pension and Pensioners' Welfare , New Delhi 10th October, 2024*

**OFFICE MEMORANDUM**

**Subject: Clarification regarding timely payment of GPF final payment to the retiring Government servant -regarding**

Recently few references regarding interest on

delayed payment of GPF to the retired Government have been received for clarification whether interest is payable on GPF after retirement.

2. In this connection, it may be stated that detailed clarifications regarding timely payment of GPF final payment to the retiring Government servant were furnished to all Ministries/Departments vide this Departments' Office Memorandum No.3/3/2016-P&PW(F) dated 16th January, 2017 (copy enclosed).

3. The per Rule 34 of General Provident fund (Central Service) Rules, 1960 clearly provides that when the amount standing at the credit of a subscriber in the General Provident Fund becomes payable, it shall be the duty of the Accounts Officer to make payment.

4. It is also added the amount deposited in General Provident Fund Account is solely the asset of the individual Government servant. Any disciplinary case pending or penalty imposed against him docs not have any impact on the disbursement of the GPF amount. As per Rule 11(4) of GPF Rules, in case the GPF balance is not paid on retirement, interest on the G PF balance is required to be paid for the period beyond the date of retirement also.

5. This issues with the approval of competent authority. ❐

*No 3/3/2016-P&PW (F) Ministry of Personnel, PG & Pensions Department of Pension & Pensioners' Welfare Desk-F , New Delhi 16th January, 2017*

**OFFICE MEMORANDUM**

**Subject: Clarification regarding timely payment of GPF final payment to the retiring Government servant — regarding**

During review meetings held to evaluate the status of implementation of Bhavishya with Ministries / Departments, it was observed that GPF final payment in many cases is not being paid to the retiring Government servants immediately on retirement from service leading to payment of interest for the delayed period.

2. Rule 34 of General Provident Fund (Central Service) Rules clearly provides that when the amount standing at the credit of a subscriber in the General Provident Fund becomes payable, it shall be the duty of the Accounts Officer to make payment. The authority for the amount payable is to be issued at least a month before the date of superannuation, but payable on the date of superannuation. It may be noted that the requirement of submitting a written application by the retiring Govt. servant for GPF final payment has been dispensed with vide this Department's Notification No. 20(12)/94-P&PW (E) dated 15.11.1996 and notified under S.O No.3228 dated 23.11.1996.

3. As per Rule 11(4) of GPF Rules, in case the GPF balance is not paid on retirement, interest on the GPF balance is required to be paid for the period beyond the date of retirement also. While interest for the first six months beyond retirement can be allowed by the PAO in the normal course, approval of Head of the accounts office is required for payment of interest beyond six months and that of Controller of Account/Financial Adviser beyond a period of one year

4. To ensure timely final payment of GPF, and to avoid unnecessary financial burden on account of interest beyond retirement, it has now been decided that every case, in which payment of interest on General Provident Fund becomes necessary in terms of Rules 11(4) of GPF Rules, 1960, shall be put up for consideration to the Secretary of the Administrative Ministry/Department. In all such cases the Secretary of the Administrative Ministry/Department will fix responsibility at ali levels to take appropriate action against the Government servant or servants who are found responsible for the delay in the payment of General Provident Fund.

5. This issues with the concurrence of the Ministry of Finance, Department of Expenditure, vide their 1D NO.187/E.V/2016 dated 27" September 2016.

6. Hindi version will follow.

❐

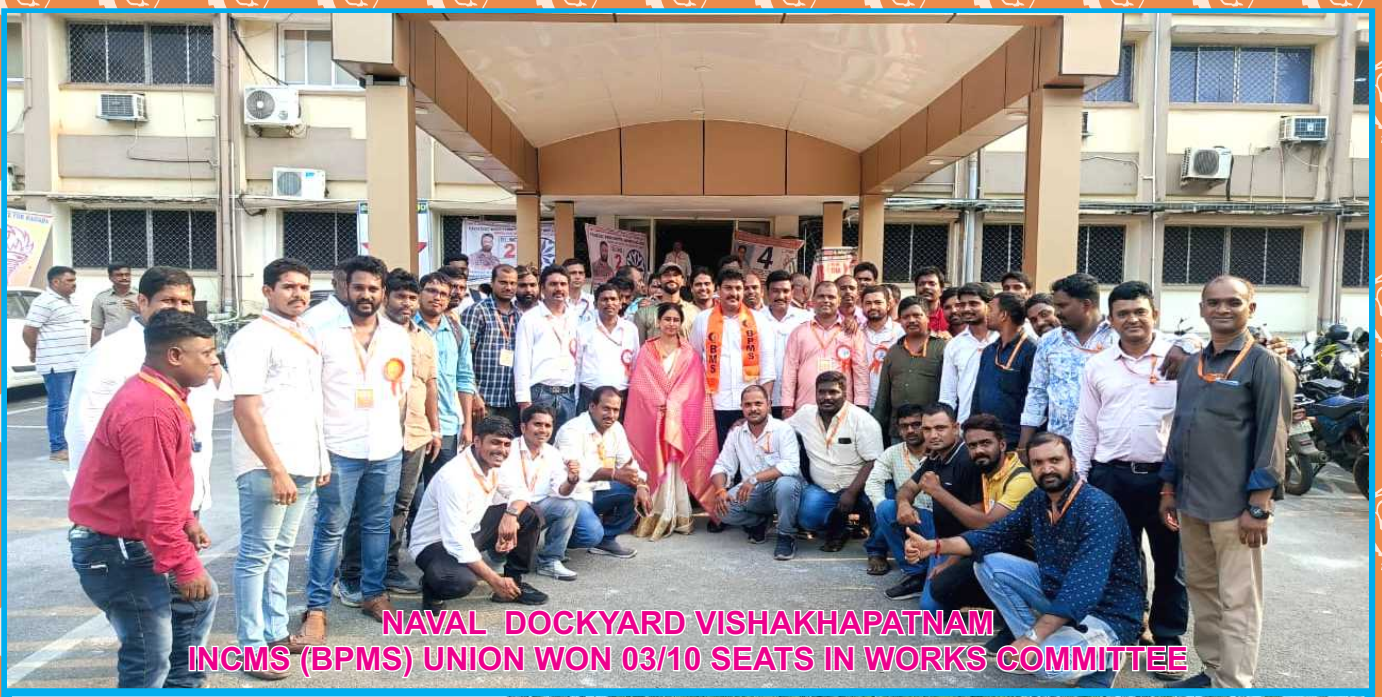

NAVAL DOCKYARD VISHAKHAPATNAM
INCMS (BPMS) UNION WON 03/10 SEATS IN WORKS COMMITTEE

DLRL Karmika Sangh, Hyd protested against DRTC cadre review today.

FIELD GUN FACTORY KANPUR UNION
PROTEST AGAINST 1 OCTOBER OFB CORPORATION

RNI No. MAHBIL/2002/8760 Publication Date : 31 October. 2024 MONTHLY NEWS PAPER
Postal Regd. No. Misc-II/C.P.M//007/K.PH.O./2020 dt 29-12-2020 (for 2021-23)• Posted on Dt. 26,27th Monthly

# भावपूर्ण श्रद्धान्जलि

स्व. ऐश्वर्य सिन्हा
506 आधार कार्यशाला
जबलपुर

स्व. एलेक्जेण्डर टोप्पो
आयुध निर्माणी
खमरिया

स्व. रणधीर कुमार
आयुध निर्माणी
खमरिया

**भारतीय प्रतिरक्षा मजदूर संघ अपने कार्यकर्ता की कार्य के दौरान दुर्घटना में मृत्यु होने पर ईश्वर से प्रार्थना करता है कि पीड़ित परिवार को दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करे व दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान दें।**

कृपया अपनी प्रतिक्रियाएँ हमें इस पते पर भेजिये।

*If undelivered please return to :*

***"Pratiraksha Bharti"***
C/o. Bharatiya Pratiraksha Mazdoor Sangh
2, Naveen Market, Kanpur - 208 001
*Mob. : 9450153677, Tel./Fax : 0512-2332222*
*Website : www.bpms.org.in*
*E-mail : gensecbpms@yahoo.co.in, cecbpms@yahoo.in*

बुक पोस्ट

***Publisher and Owner :*** Bhartiya Pratiraksha Mazdoor Sangh, 2 Naveen Market, Kanpur-208001
***Printed*** at Chhaya Press 8/208, Arya Nagar, Kanpur-208002 • Mob. : 9839223650